Summary

हिन्दी का स्तोत्र-साहित्य

प्रथम अध्याय

स्तोत्र शब्द का अर्थ , उत्पत्ति एवं वैदिक रूप

१. स्तोत्र शब्द का अर्थ , परिभाषा एवं लक्षण
२. वेदों में स्तोत्र शब्द के रूप और पर्याय
३. स्तोत्र शब्द की व्युत्पत्ति
४. स्तोत्र लिखने का उद्देश्य
५. स्तोत्र-साहित्य का विकास
६. धार्मिक विकास में स्तोत्रों का स्थान
७. स्तोत्र-साहित्य के आधार पर चिन्मय रस-सिद्धान्त का उद्भव
८. अन्य प्रकार के प्रगीतों के साथ स्तोत्रों की तुलना
९. हिन्दी-स्तोत्रों के विविध रूप
१०. निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

स्तोत्र-साहित्य का ऐतिहासिक विकासक्रम

वेदों के विभाग , अन्य उक्त कालीन वैदिक ग्रंथ , स्तोत्रों के आधार , संस्कृत के पुराणों और महाकाव्यों में स्तोत्र-साहित्य , संस्कृत के अन्य स्तोत्र सम्बंधी ग्रंथ । शिव महिम्नः : स्तोत्र , सूर्य शतक , शंकराचार्य के स्तोत्र , आलवंदार स्तोत्र , कृष्ण कर्णामृत , लक्ष्मीसहस्त्र स्तोत्र , शिवस्तोत्रावली , स्तुति कुसमाञ्जलि , पंडितराज जगन्नाथ के स्तोत्र ।

संस्कृत-स्तोत्र साहित्य के रस

जैन-साहित्य में स्तोत्र

बौद्ध साहित्य में स्तोत्र

नाथ-सिद्ध साहित्य में स्तोत्र

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

हिन्दी-स्तोत्र साहित्य का विकास

। आदिकाल विद्यापति , चन्द वरदाई

भक्तिकालीन साहित्य में स्तोत्र । ज्ञानमार्गी परम्परा ,सिख सम्प्रदाय ,

प्रेममार्गी परम्परा ।

राम-भक्ति-साहित्य में स्तोत्र .. गोस्वामी तुलसीदास

राम चरित मानस के स्तोत्र , विनय पत्रिका के स्तोत्र , रामलला नहछू , पार्वती मंगल ,जानकी मंगल , रामाज्ञा प्रश्न , बरवै रामायण , दोहावली , हनुमान बाहुक , श्रीकृष्ण गीतावली , गीतावली , कवितावली

सहजराम .. रघुवंशदीपक , केशवदास ..। रामचन्द्रिका ,विज्ञान गीता ।

रहीम , सेनापति

रसिक सम्प्रदाय के कुछ कवि .. छत्रशाल , प्रेमसखी , कृपानिवास

कृष्ण-भक्ति ..साहित्य में स्तोत्र

चैतन्य सम्प्रदाय

वल्लभ-सम्प्रदाय .. सूरदास , ~~परमानं~~ एवं अष्टछाप के कवि

राधावल्लभ सम्प्रदाय .. हित हरिवंश ध्रुवदास आदि

टट्टी सम्प्रदाय .. हरिदास,श्री भट्ट

अन्य कवि .. गदाधर भट्ट , मीरा, रसखान

कृष्णभक्ति-काव्य का पर्यवेक्षण

चतुर्थ अध्याय

भक्तिकालीन स्तोत्र साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि

दक्षिण के वैष्णव आचार्य तथा उनके दार्शनिक मतवाद , १. श्री सम्प्रदाय २.माध्व ~~ब्रह्म~~ सम्प्रदाय ३. निम्बार्क सम्प्रदाय

।अ। राधावल्लभ सम्प्रदाय ।ब। टट्टी सम्प्रदाय

४. रूद्र सम्प्रदाय ५. शैव तथा शाक्त मत ६. उत्तर भारत की निर्गुण भक्ति परम्परा ७. सूफी मत ८.सगुण एवं निर्गुण भक्ति-साहित्य की सामान्य विशेषतायें

विविध सम्प्रदायों के स्तोत्र-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

पांचवा अध्याय

रीतिकालीन स्तोत्र-साहित्य

१. रीतिकालीन साहित्य के विभिन्न रूप
१. रीतिबद्ध कवियों का स्तोत्र-साहित्य २. रीति सिद्ध कवियों का स्तोत्र-साहित्य ३. रीति मुक्त कवियों का स्तोत्र-साहित्य ४. रीति प्रधान कवियों का स्तोत्र-साहित्य ५. वीर-देव-काव्यों में स्तोत्र-साहित्य ६. अनूदित काव्यों का स्तोत्र-साहित्य ७. प्रमुख स्तोत्रकार गुरुगोविंदसिंह

छठां अध्याय

आधुनिक काल का स्तोत्र-साहित्य

१. भारतेन्दु युग के कवियों का स्तोत्र-साहित्य २. द्विवेदी युग के कवियों का स्तोत्र साहित्य ३. छायावादी युग के कवियों का स्तोत्र साहित्य ४. प्रगतिवाद ,प्रयोगवाद- युग के कवियों का स्तोत्र-साहित्य
प्रमुख स्तोत्रकार 'निराला'

सातवां अध्याय

भाव-पक्ष और कलापक्ष

आदि कालीन साहित्य में , २. भक्तिकालीन साहित्य में ३. रीतिकालीन साहित्य में ४. आधुनिक कालीन साहित्य में ५. स्तोत्र-साहित्य मे 'रस'

आंठवा अध्याय

स्तोत्रों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिष्ठान

१. वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में २. आदिकालीन साहित्य में ३. भक्तिकालीन साहित्य में ४. रीतिकालीन साहित्य में ५. आधुनिक कालीन साहित्य में
निष्कर्ष

नवां अध्याय

उपसंहार हिन्दी-स्तोत्र-साहित्य की देन
परिशिष्ट : १.समाधान कविकृत ..लक्ष्मण शतक २. सहायक ग्रंथों की सूची